दादी प्रकाशमणी

अमृतवेले के योग में लाइन से दृष्टि देती
सबको बाबा का प्यार लुटाती मुरली मधुर सुनाती
बाबा-बाबा मुख से कहती वो थी श्रेष्ठ मणी
प्रकाश का वो पुंज थी प्यारी दादी प्रकाशमणी

निमित्त, निर्मल, निर्माण बनाती सेवा का महत्व बताती
डिपार्टमेंट का चक्र लगाती वायब्रेशन दे जाती
आते जाते हाथ हिलाती थी बहुत रमणीक
प्रकाश का वो पुंज थी प्यारी दादी प्रकाशमणी

बाबा ने हाथ में हाथ दिया और बागडोर संभलाई
बाबा की खूबीयों को दादी ने अपने में अपनाई
शुभ भावना की खान थी वो शुभचिन्तक मणी
प्रकाश का वो पुंज थी प्यारी दादी प्रकाशमणी

खूब प्यार से संभालती थी बाबा की फुलवारी
इकानामी का ध्यान रखती थी बड़े दिलवाली
सिम्पल सेम्पल थी दादी ना चाहती मान मनी
प्रकाश का वो पुंज थी प्यारी दादी प्रकाशमणी

38वर्ष तक बहुत कुशलता से परिवार चलाया
ज्ञान योग और सेवा द्वारा सबका मन बहलाया
अष्ट रत्न की आत्मा थी वो ऊंचे कुल की धनी
प्रकाश का वो पुंज थी प्यारी दादी प्रकाशमणी

पिकनिक वो खूब कराती थी पीसपार्क ले जाती

गीत मधुर सुनाती थी और खेल खेलने आती

सोने को पारस बनाती थी वो पारसमणी

प्रकाश का वो पुंज थी प्यारी दादी प्रकाशमणी

ठंडी में लड्डू बनवाती और सभी को खिलाती

हर कोने में चक्र लगाती करके वो सिखलाती

सदा बांटती रहती थी वो थी सच्ची वरदानी

प्रकाश का वो पुंज थी प्यारी दादी प्रकाशमणी

जब भी विदेश यात्रा पर जाती छुट्टी लेकर जाती

वापस जब यात्रा से आती समाचार जरूर सुनाती

सब कोई दादी-दादी कहते ज्ञानी या अज्ञानी

प्रकाश का वो पुंज थी प्यारी दादी प्रकाशमणी

बी0के0 सत्यनारायण भाई, टोली विभाग, ज्ञान सरोवर